situation and assessment of long-term demand and supply.

श्री रवि राय (पुरी) : यह रिपोर्ट कब तक दे देंगे इस बारे में कुछ नहीं बताया। रिपोर्ट कब तक मिलेगी ?

श्री बलराज मधोक (दक्षिण दिल्ली) : जिस ढंग से अभी यह रिपोर्ट पेश की गई है उससे लगता है कि कुछ न कुछ दाल में काला है। हम जानते हैं कि यह केवल जनता की आंख में धूल झोंकने के लिए किया गया है। यह गवर्नमेंट अगर कुछ करना चाहती है प्रैक्टिकल तो उसके लिए यह बताना आवश्यक है कि किस टाइम तक यह रिपोर्ट आयेगी। जब तक यह नहीं बताया जाता तब तक यही समझा जायगा कि लोगों की आंखों में धूल डालने के लिए यह प्रयास किया गया है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : स्पष्टीकरण आना है तो इकट्ठा ही आ जाय। मैं भी यह जानना चाहता हूं कि संसद सदस्य के नाते श्री ज्योतिर्मय बसु और राज्य सभा के श्री आनन्दन इस में शामिल किये गये हैं, लेकिन अगर लोक सभा भंग हो गई तो ज्योतिर्मय बसु इस के सदस्य रहेंगे या नही रहेंगे यह भी स्पष्ट कर दीजिए।

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर) : ऐसे तो मैं जो कमीशन अप्वाइन्ट किया गया है उसका स्वागत करता हूँ। लेकिन एक बात मैं यह जानना चाहता हूँ कि हम लोगों ने जो बार-बार कहा था अनएम्प्लायमेंट डोल के सिलसिले में, बेकारी भत्ता देने के बारे में, उसका कोई मेंशन इसके टर्म्स आफ रेफरेंस में नहीं है। तो हमारी यह मांग है कि अनएम्प्लायमेंट डोल का रेफरेंस भी इसके टर्म्स आफ रेफरेंस में होना चाहिए।

जहां तक कमीशन का सवाल है, कमीशन का इतिहास आप देखें तो मालूम होगा कि कमीशन बैठता है, कमीशन लेटता है और फिर कमीशन सो जाता है। तो यही डर मुझे इसके साथ भी लगता है और इसीलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि अनएम्प्लायमेंट डोल दिया जा सकता है या नहीं दिया जा सकता है इसके बारे में अगर परिस्थिति साफ हो जाय तो अच्छा है ताकि आज जो बेकार हैं उनके दिमाग में यह बात आए कि नौकरी मिले या न मिले कम से कम बेकारी का भत्ता उन्हें मिलेगा।

श्री भागवत झा आजाद : सभापति महोदय, यह बात तो स्पष्ट रूप से सदन में कह दी गई है कि जहां तक बेकारी भत्ता देने का प्रश्न है वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में यह कतई संभव नहीं है। जहां तक कमीशन के बैठने लेटने और सोने का प्रश्न है मैं यह कहूं कि सरकार निश्चयात्मक रूप से पूरे अपने विचार के साथ यह चाहती है कि यह कमीशन जल्दी से जल्दी अपना कार्य प्रारंभ करे और इसकी रिपोर्ट जल्दी से जल्दी हमारे सामने आए। इस सम्बन्ध में मैं यह कहना चाहता हूँ कि हम बिलकुल सिंसियर हैं कि जल्दी से जल्दी यह काम प्रारंभ हो और जल्दी इसकी रिपोर्ट मिले।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : अध्यक्ष महोदय, जल्दी का मतलब क्या है ? अगर जल्द वाले मतलब को समय के साथ बाँध दें तो ज्यादा अच्छा हो क्योंकि यह बड़ा मिसलीडिंग है। इसको समय के साथ बांधे।

श्री झारखंडे राय (घोसी) : पंजाब सरकार ने अभी एलान किया है कि बेकार ग्रेजुएट्स को वह महंगाई भत्ता देगी। तो यह उन्होंने कैसे किया अगर उनके पास धनराशि नहीं है और फिर भारत सरकार जो अधिक धनराशि संपन्न है वह क्यों नहीं कर सकती ?

———

17.35 hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION RE : LATE RUNNING OF TRAINS

सभापति महोदय : यह आधे घंटे की चर्चा

5 मिनट देर से प्रारंभ हो रही है तो अब यह चर्चा 6 बज कर 5 मिनट तक जारी रहेगी।

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : सभापति महोदय, रेलगाड़ियों के देर से चलने के बारे में जो यह चर्चा हम प्रारंभ कर रहे हैं यह चर्चा 17-11-1970 को दिये गये मेरे प्रश्न के उत्तर से सम्बन्धित है। मैंने इस प्रश्न को करने के पहले 14 अक्तूबर को रेल मन्त्री के नाम एक पत्र लिखा था और जब उन्होंने कोई जवाब उस संबन्ध में नहीं दिया तो मैंने उसे प्रश्नों के रूप में पूछा। उसी के जवाब के सिलसिले में यह चर्चा मैं प्रारंभ कर रहा हूं।

सभापति महोदय : शास्त्री जी, आप अपनी स्पीड तेज रखिए ताकि आपकी गाड़ी ठीक समय से पहुँचे।

श्री रामावतार शास्त्री : उस प्रश्न के जवाब में यह कहा गया था, मेरे पत्र में निम्न चार बातों की चर्चा थी—

(1) पूर्व रेलवे के सवारी और माल डिब्बा कर्मचारियों की हड़ताल।

(2) गाड़ियों का देर से चलना।

(3) गाड़ियों में पानी, रोशनी और पंखों की असंतोषजनक व्यवस्था, डिब्बों में गन्दगी, तीसरे दर्जे के शयनयानों और पहले दर्जे के डिब्बों में परिचरों का न रहना।

(4) 10/11 अक्तूबर 1970 को तूफान एक्सप्रेस का देर से चलना, पहले दर्जे के जिस डिब्बे में वह यात्रा कर रहे थे उसमें मुगलसराय से आगरा तक और तीसरे दर्जे के तीन टायर वाले शयनयान में पटना से आगरा तक परिचर का न रहना, गाड़ी के पहले दूसरे और तीसरे दर्जे के डिब्बों में रोशनी और पंखों की असंतोषजनक स्थिति, काफी डिब्बों में पानी का न होना और डिब्बों में गन्दगी।

इतनी बातें उसमें थीं। इसके सिलसिले में मैं यह कहना चाहता हूं कि गाड़ियों का देर से चलना यह महामारी के रूप में हमारे देश में फैल चुका है। कोई भी ऐसी गाड़ी नहीं है, वह भले ही राजधानी एक्सप्रेस क्यों न हो, डी लक्स क्यों न हो, तमाम डाक गाड़ियां या तेज चलने वाली गाड़ियां क्यों न हों, ये सब गाड़ियां देर से चलती हैं। कोई गाड़ी समय से यात्रियों को नहीं पहुंचाती जिसके कारण यह भय बराबर बना रहता है कि हम कोई काम ठीक समय पर पहुँच कर कर सकेंगे या नहीं कर सकेंगे। गाड़ियों का नाम गिनाने का इस समय मौका नहीं है। लेकिन जितनी भी देश में अभी गाड़ियां चल रही हैं एक कोने से दूसरे कोने तक कोई भी समय पर नहीं चलतीं। न समय से छूटती हैं न पहुँचती हैं। मुझे अपना अनुभव है उत्तरी भारत में सफर करने का, आमतौर पर कोई गाड़ी समय से नहीं चलती और मैंने जब अन्य सदस्यों से पूछताछ की तो पता चला कि सब के यहां यही शिकायत है, कोई गाड़ी टाइम पर नहीं चलती। अपर इण्डिया एक्सप्रेस हो, दिल्ली हावड़ा एक्सप्रेस हो, आमाम मेल हो, कालका मेल हो, एयर कंडीशन डी लक्स हो, ब्लैक डायमंड एक्सप्रेस हो, कोल फील्ड एक्सप्रेस हो और दूसरी दिशाओं में चलने वाली जो भी गाड़ियां हैं ये सभी देर से चलती हैं। अगर केवल पैसेंजर गाड़ियां ही देर से चलतीं तो यह कहा जा सकता था कि लोग जंजीर खींच लेते हैं, इसलिए देर से चलती है। लेकिन ये जो बड़ी बड़ी गाड़ियां हैं इनके बारे में ऐसा क्यों? मंत्री महोदय का एक लम्बा पत्र मुझे कल ही मिला है इसी के जवाब में जिससे यह पता चलता है कि अधिकारियों का उसमें कोई कसूर नहीं है, सारा कसूर जनता का है क्योंकि वह जंजीर खींचते हैं, या ड्राइवरों का है, रेल कर्मचारियों का है, लेकिन जो इनके सफेद हाथी लोग हैं

[श्री रामावतार शास्त्री]

इनका कोई कसूर नहीं है। यदि पूरे पत्र को आप पढ़ जाइये तो आप को यह मालूम हो जायेगा। तो यह स्थिति आज हमारे देश में गाड़ियों के विलम्ब से चलने के बारे में है। हम यह निश्चय नहीं कर सकते कि हम समय से पहुँचेंगे या नहीं। कई दफा संसद सदस्यों के समय पर नहीं पहुचने की वजह से प्रश्न छूट गये, जरूरी बहस में हम लोग भाग नहीं ले सके। वहां से चले थे कि समय से पहुँच जायेंगे, लेकिन नहीं पहुँच पाये। बहुत से व्यापारियों को समय से नहीं पहुंचने के कारण नुकसान होता है। किसी को यह पता नहीं होता कि हम कब पहुंचेंगे या नहीं पहुँचेंगे। तो गाड़ियों के विलम्ब से चलने के बारे में बात यह है।

सफाई के बारे में आप जानते हैं—जब फर्स्ट क्लास में ठीक से सफाई नहीं होती तो तीसरे दर्जे के यात्रियों को कौन पूछेगा। डिब्बों में पानी नहीं होता है। मुझे कई बार फर्स्ट क्लास में सफर करना पड़ा है मेरे अपने इलाके से—पटना से दिल्ली और एक दफा तो माननीय सदस्य बाल्मीकि चौधरी भी हमारे साथ थे, वह इसके गवाह हैं। एक दफा हमारे श्री सत्य नारायण सिंह जी बनारस से मेरे साथ चले। जो अपर इण्डिया एक्सप्रेस हावड़ा से चली थी वह बनारस तक बिना बत्ती के आई, उसमें कोई रोशनी नहीं थी। जब हम ने गार्ड से पूछा कि यह क्या बात है, आपने गाड़ी क्यों चलाई तो उन्होंने जवाब दिया—शास्त्री जी, अगर हम नहीं चलाते तो हमारी नौकरी चली जाती, तो इससे आप अन्दाज लगाइये कि बनारस तक लोगों को अन्धेरे में चलना पड़ा। न रोशनी है, न सफाई है, न पानी है, न परिचर है—न तीसरे दर्जे के डिब्बे में परिचर है और न फर्स्ट क्लास के डिब्बे में है।

इसी तरह अन्य भी बहुत सी कठिनाइयां हैं। रेलवे की जो खाना देने वाली कैंटीन्ज हैं, वे ठीक से खाना नहीं देती हैं, जो सरकारी कैंटीन्ज हैं, उनमें तो गड़बड़ है ही, लेकिन जो गैर-सरकारी कैंटीन्ज हैं, उनमें तो यात्रियों का बिलकुल ठगा जाता है, सड़ी हुई चीजें दी जाती हैं। मुझे एक बार गोमो स्टेशन पर सड़ी हुई पाव-रोटी दी गई—यह हालत हैं। मैं ज्यादा क्या कहूं हम सभी भुक्त-भोगी हैं, रेल मन्त्री को छोड़कर, क्योंकि उनके लिए तो हर तरह का इन्तजाम किया जाता है, बाकी सब को इन चीजों का अनुभव है। मैं पूछना चाहता हूँ कि आप जब रेलवे से इतनी आमदनी करते हैं, हर दफा किराया बढ़ाया जाता है, तो जो सामान्य सुविधायें हैं वे यात्रियों को क्यों नहीं दी जातीं? दूसरी तरफ बड़े बड़े अफसर बढ़ते जाते हैं, कोई भूल करे पर सजा मजदूरों को दी जाती है। भूल करने पर जरूर सजा दी जाय, मैं उसका विरोधी नहीं हूँ, लेकिन ये बड़े बड़े अफसरान, जिनकी जवाब देही है कि समय पर गाड़ी चले, सफाई का ठीक प्रबन्ध हो, पानी मिले, गाड़ियों में रोशनी हो, पंखे ठीक से चलें—अगर ये चीजें नहीं होती हैं तो आप इनके खिलाफ क्या कार्यवाही करते हैं। गर्मियों में बिना पंखों के लोगों की क्या हालत होती है, सभापति महोदय, आप स्वयं जानते हैं। मैं अब बहुत ज्यादा गहराई में नहीं जाना चाहता हूँ लेकिन आप से अनुरोध करना चाहता हूं कि इस तरह के जवाब देकर अफसरों के गुनाहों पर पर्दा मत डालिये, उन को पकड़िये, उनके खिलाफ कार्यवाही कीजिये कि गाड़ी लेट क्यों चल रही है, क्यों पानी नहीं है, क्यों रोशनी नहीं है? जब तक आप ऐसा नहीं करेंगे, तब तक मेरा ख्याल है आप गाड़ियों को समय पर नहीं चला सकेंगे और यात्रियों की सुख-सुविधाओं का बन्दोबस्त नहीं कर सकेंगे। मैं यह कह देना चाहता हूं कि यदि आप नहीं कर सकेंगे तो फिर खराब होगा। यह कह देने से कि हड़ताल की वजह से गड़बड़ हो गई है, काम नहीं चलेगा। हड़ताल क्यों होती है? अभी पटना में कैरिज एण्ड वैगन डिपार्टमेंट के लोगों ने हड़ताल की, पूर्व रेलवे में हड़ताल हुई, इसकी

जवाब-देही वहां के डी० एस० पर है—मैं इस के विस्तार में नहीं जानना चाहता हूँ, लेकिन इन जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए। एक आदमी को गलत तरीके से मुअत्तल कर दिया गया था। फलतः 29 अगस्त से 17 सितम्बर तक पूरे पूर्व रेलवे में हड़ताल रही। एक तरफ आप उन्हें गलत आदेश देते हैं, फिर उन्हीं को सजा देते हैं, उन्हें तंग करते हैं, सताते हैं—तो इस तरह गाड़ी कैसे चलेगी ?

मैं अब आप से कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूं:

1. गाड़ियां ठीक से चलें, यात्रियों को तमाम सुविधायें उपलब्ध हों, कहना न पड़े, शिकायत पुस्तिका में लिखना न पड़े—क्योंकि लिखने से कुछ भी असर नहीं होता है—इसके लिए क्या आपने कोई योजना बनाई है, अगर बनाई है तो उसकी बानगी यहां पेश कीजिये।

2. जहां पैसेन्जर गाड़ियां चलती है, वहां विलम्ब के कारण गाड़ियों का कम होना है, इसलिए क्या आप लोकल यानी मुकामी गाड़ियों की संख्या में वृद्धि करेंगे ? मेरे यहां पटना से गया जो गाड़ी जाती है, उसकी रोज जंजीर खींची जाती है, इस लिए कि गाड़ियों की कमी है—तो आप बताइये कि गाड़ियों की संख्या बढ़ायेंगे ?

3. इन गाड़ियों के इन्जिन भी खराब हैं, बहुत पुराने इन्जिन लगा दिये गये हैं, पुराने खराब इन्जिनों को बदलने के सम्बन्ध में आप का क्या बिचार है, क्या आप इन तमाम इन्जिनों को रद्द करने के लिए तैयार हैं ?

4. क्या सरकार इस काम में सहायता लेने के लिए रेलवे मजदूरों की विभिन्न यूनियनों—केवल मान्यता प्राप्त नहीं, जितनी भी यूनियनें काम करती हैं, चाहे वे किसी भी कैटेगरी में हों, यात्री संघों तथा स्ट्रडेन्ट्स आर्गेनिजेशन्ज—क्योंकि आप कहते हैं कि छात्र लोग ज्यादा गड़बड़ करते हैं—के प्रतिनिधियों तथा संसद् सदस्यों, एम०एल०एज०, इन तमाम लोगों को लेकर समय-समय पर कोई मीटिंग आयोजित करने का विचार रखती है या नहीं ?

5. गाड़ियों में जो तकनीकी गड़बड़ियां रहती है, इन तकनीकी गड़बड़ियों को दुरुस्त करने के लिए आपने कौन सी योजना बनाई हैं ?

6. आखरी सवाल—क्या सरकार रेलवे के निजी भोजनालयों के कुप्रबन्ध को देखते हुए उन्हें अपने हाथ में लेकर चलाने तथा उन्हें बिलकुल बन्द कर देने का एलान अभी फौरन करेगी ? क्योंकि कटिहार के बारे में आप रेलवे बजट के समय सुन चुके हैं कि किस तरह से भारत सेवक समाज के स्वयंभू नेता गोलमाल करते हैं, अपने नाम पर ठेके लेते हैं और गन्दा और रद्दी भोजन देते हैं और जब शिकायत होती है तो पैरवी के लिए रेलवे मन्त्री के पास जाते हैं। सुना है कि यहां पर बहस होने के बाद अब वे लोग पैरवी के लिये आये हुए हैं। इसलिए मैं जानना चाहता हूं कि आप तमाम प्राइवेट कैटरिंग को बन्द करने का यहां एलान करेंगे या नहीं ?

श्री बेनी शंकर शर्मा (बांका) : सभापति महोदय, मुझे केवल मेरे अपने क्षेत्र के सम्बन्ध में एक प्रश्न पूछना है। कुछ दिन पहले माननीय नन्दा जी ने सभी पार्लियामेंट के मेम्बरों

[श्री बेनी शंकर शर्मा]

को एक लाल पुस्तिका भेजी थी और उसमें उन्होंने कहा था कि सदस्यगण उन्हें लिखकर दे दिया करें। मुझे आशा थी कि अगर हम पार्लियामेंट के सदस्य कोई शिकायत उन्हें भेजेंगे तो उस पर शीघ्र कार्यवाही होगी और आगे से शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। आप जानते हैं कि भागलपुर लाइन पर एक दानापुर फास्ट पैसेन्जर चलती है, यह गाड़ी दानापुर से हावड़ा तक जाती है और इसका डिस्टेंस बहुत कम है, लेकिन उस छोटे डिस्टेंस पर भी वह गाड़ी हमेशा लेट चलती है। यह काफी इम्पार्टेन्ट लाइन है, इस पर बिहार के कई बड़े-बड़े नगर पड़ते हैं, लेकिन इस ट्रेन में न लाइट रहती है और न कभी समय पर पहुँचती है। एक दूसरी ट्रेन जो इस लाइन पर चलती है वह है—अपर इण्डिया एक्सप्रेस—यह लौंग डिस्टेंस ट्रेन है, दिल्ली से हावड़ा तक चलती है—यह ट्रेन भी कभी समय पर नहीं पहुंचती। पटना में 12 बजकर 10 मिनट पर पहुंचने का समय है, लेकिन सुबह 3 या 4 बजे पहुंचती है और कभी-कभी तो दूसरे दिन सुबह 8 बजे पहुँचती है। इसी तरह से सियालदह साढे ग्यारह या बारह बजे पहुँचने का नियम है, लेकिन शाम को 5 बजे पहुँचती है। महीने में अगर एक दिन ऐसा हो जाय तो चल सकता है, लेकिन रोज तो सहन नहीं किया जा सकता। इसके लिए मैंने मंत्री जी को लिखा, आपकी लाल पुस्तिका की पर्ची भी भेजी, लेकिन जैसा शास्त्री जी ने अपने भाषण में कहा—कहीं पर जंजीर खींच दी गई, कहीं पर लड़कों ने बदमाशी की—ऐसा कारण बता दिया जाता है। लेकिन इसके लिये पैसेन्जर क्यों सफर करे, यह सरकार का दोष है। अगर लड़के बदमाशी करते हैं तो यह सरकार का काम है कि उनको नियन्त्रित करे। मुझे भी उनकी तरफ से ऐसा ही जवाब आया। मैं चाहता हूँ कि मन्त्री महोदय इस पर सोचें। अंग्रेजी जमाने में लोग यह शिकायत करते थे कि गाड़ियों में लोग भेड़-बकरी की तरह से सफर करते हैं लेकिन आजकल तो लोग डिब्बों में चूहे बिल्ली की तरह भरे रहते हैं। इसलिए मेरा अनुरोध है कि गाड़ियों में थर्ड क्लास के और ज्यादा डिब्बे लगाये जायें ताकि लोगों को कुछ सहुलियत मिल सके। थर्ड क्लास में कुछ पंखे लगाये गये हैं लेकिन जब फर्स्ट क्लास के डिब्बों के पंखे ही नहीं चलते हैं तो थर्ड क्लास के पंखे कैसे चलेंगे? इसलिए मैं जानना चाहता हूँ कि इन सब शिकायतों को दूर करने के लिये और विशेषकर जैसा मैंने जिक्र किया कि लूप लाइन पर जो दो गाड़ियां चलती हैं उनमें शिकायतों को दूर करने के लिए आप कुछ करने जा रहे हैं या नहीं?

रेलवे मन्त्रालय में उप-मन्त्री (श्री मु० यूनस सलीम) : चेयरमैन साहब, मैंने बहुत गौर से शास्त्री जी की बातों को सुना और जो उन्होंने सवालात पूछे हैं उनको भी नोट किया। रेलवे का मामला बहुत गम्भीरता के साथ गौर का मोहताज है और वह इसलिए कि गवर्नमेंट आफ इंडिया का कोई डिपार्टमेंट ऐसा नहीं है जिससे जनता का इतना ताल्लुक हो जितना कि रेलवे डिपार्टमेंट से है। इसलिए रेलवे डिपार्टमेंट में जरा भी अगर कोई कमी या कोई ऐब या कोई खराबी पैदा होती है तो सबसे पहले जनता के इल्म में वह बात आती है और लोग उससे फायदा उठाकर उसको एतराज का निशाना बनाते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि गुजिश्ता चार पांच साल से ट्रेन्स के देर से चलने और जहां के लिए वह रवाना होती हैं उन स्टेशंस पर देर से पहुंचने की शिकायतें आ रही हैं। मगर इस मसले पर हमको जरा ठंडे दिल से गौर करने की जरूरत है कि ऐसा क्यों होता है। शास्त्री जी ने निहायत गुस्से और निहायत नागवारी से यह बात कही है कि उनके पत्र के जवाब में, जोकि उनको पत्र लिखा गया उसमें सारी

जिम्मेदारी जनता पर छोड़ दी गई और रेलवे के कर्मचारियों को निर्दोष करार दिया गया।

श्री रामावतार शास्त्री : रेलवे के अफसरों को। कर्मचारियों को तो आम कहते ही हैं कि वे गलत काम करते हैं।

श्री मु० यूनुस सलीम : ऐसी बात नहीं है। आपको अपना कर्तव्य और अपना फर्ज भी जरा समझना चाहिए। खाली रेलवे अफसरों पर जिम्मेदारी आयद करने से प्राब्लम हल नहीं होगी।

श्री मणिभाई जे० पटेल (दमोह) : जापान में प्रजातन्त्र है। टोकियो में 380 गाड़ियां चलती हैं लेकिन साल में शायद एक ट्रेन भी लेट नहीं होती है।

श्री मु० यूनुस सलीम : जापान के लोग तारों की चोरियां नहीं करते हैं। जापान में लोग बल्ब, पंखे और शीशे नहीं चुरा ले जाते हैं। जापान में लोग अपने गांवों के सामने गाड़ियों में जंजीर खींच कर उतरने की कोशिश नहीं करते हैं। आप यह न भूलें कि हमारे देश में इस समय जो कुछ हो रहा है उसको रोकने की हम कहां तक जिम्मेदारी ले सकते हैं। जैसा कि मैं कह रहा था मेरे कुछ दोस्तों ने मुनासिब समझा कि मुझे इन्टरप्ट करें। इन्टरप्ट करने से बात कुछ अच्छी नहीं बनेगी बल्कि जो कुछ मैं कह रहा हूं उसको सुनने की जरूरत है। गाड़ियां लेट चलती हैं लेकिन क्यों चलती हैं, इस पर गौर करने की जरूरत है। इसके कुछ सबब ऐसे हैं जिन पर न रेलवे कर्मचारियों का कोई काबू है, न रेलवे के ओहदेदारों का कोई काबू है और न उसमें कोई ऐसा इन्तजाम हो सकता है जब तक कि लोगों में जिम्मेदारी का अहसास न हो। इसमें खास तौर पर तीन बातें गौर करने के काबिल हैं। एक तो यह है कि चेन खींचने की बीमारी हमारे देश में आम हो गई है। होता यह है कि एक कम्पार्टमेंट में 10,12 या 15 आदमी बैठ जाते हैं, वे स्टेशन आने से पहले किसी जगह पर उतरना चाहते हैं, वहां पर वे चेन खींच लेते हैं और उतर जाते हैं। रेलवे का ओहदेदार या टी० टी० जब उस कम्पार्टमेंट में जाता है और पूछना चाहता है कि यह चेन किसने खींची तो डिब्बे का कोई आदमी तैयार नहीं होता है यह बताने के लिए कि फलां आदमी ने चेन खींची है। उसकी वजह से कितने मुसाफिरों को और कितने लोगों को नुकसान होता है लेकिन कोई कोआपरेट करने के लिए तैयार नहीं होता है। अब आप बताइये कि उस वक्त रेलवे के ओहदेदार क्या करें?

इसी तरह से कम्युनिकेशन के जराये के बगैर रेलें एक जगह से दूसरी जगह पर पहुंच नहीं सकती हैं। लेकिन गेंग बने हुए हैं, रातों में कापर वायर की चोरियां मुनज्जम तरीके से होती हैं। इस तरह की जो चोरियां होती हैं और जहां पर होती हैं वहां के गांव वाले जानते हैं कि फलां गेंग आता है और चोरी करता है लेकिन उस गांव में जब पुलिस के लोग या रेलवे फोर्स के लोग जाते हैं और दरियाफ्त करने की खुशामद करते हैं लेकिन हमारे साथ कोई भी कोआपरेट नहीं करता है कि जो चोरी करने वाले लोग हैं उनको पकड़वाने में हमारी मदद करें। इसी तरह से जो हमारी एलेक्ट्रिफाइड रेलें चलती हैं उनके ओवर-हेड वायर्स चुराये जाते हैं। आप सोचें कि इस पर हमारा क्या काबू है? हम किस तरह से इसको रोक सकते हैं जब तक कि जनता के लोग, जनता के नुमाइन्दे, पोलिटिकल पार्टीज और हमारे देश के जो न्यूजपेपर्स हैं उनका कोआपरेशन हमको हासिल न हो और जबतक वे देश में ऐसी भावना पैदा न करें कि यह रेलवेज उनकी हैं, अगर रेलवेज को कोई नुकसान पहुंचेगा तो वह जनता का नुकशान होगा और अगर रेलें देर से चलेंगी तो उससे जनता को ही नुकसान और तकलीफ उठानी पड़ेगी। हमें

[श्री मु० यूनुस सलीम]

खुशी नहीं होती है कि यहां पर हम आपकी बातें सुनें और रेलों को रोजाना देर से चलाते रहें और इत्मीनान से बैठे रहें। जितनी भी तदबीरें हो सकती हैं उनको हम अख्तियार कर रहे हैं। लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जिनमें अगर हमारे कर्मचारियों का या हमारे ओहदेदारों का दोष होता है, मसलन वक्त के ऊपर वे इंजनों की निगरानी न करें या सिग्नल प्वाइन्ट्स को ठीक न करें और अगर हमको पता चलता है कि किसी आदमी की गफलत की वजह से, किसी ओहददार की निगरानी न करने की वजह से या किसी भी शख्स की गलती की वजह से या उसको कामो को ठीक तरह से अन्जाम न दे सकने की वजह से यह बात हुई है तो हम उसके खिलाफ कार्यवाही करने में कोई कोताही नहीं करते हैं।

लेकिन इस मामले में भी हमारे सामने दिक्कतें पेश आती हैं। आप जानते हैं कि हमारे पास दो तरकीबें हैं—या तो हम उनको सस्पेंड करें, डिपार्टमेंटल कार्यवाही करें या फिर उनका ट्रान्सफर करें। लेकिन जब हम उनको सस्पेंड करते हैं तो यूनियनों के नुमाइन्दे हमारे सामने आते हैं और हमको सस्पेन्ड करने नहीं देते हैं। कांस्टीट्यूशन के आर्टिकिल 311 की तहत हम कोई कार्यवाही नहीं कर सकते हैं जब तक कि शो-काज नोटिस न दें, बाजाब्ता डिपार्टमेंटल इन्क्वायरी न करें। इसमें एक साल लग जाता है इन्क्वायरी करने में। और अगर हम उनका ट्रान्सफर करते हैं तो हर आदमी, लेजिस्लेटिव असेम्बली का मेम्बर, पार्लियामेंट का मेम्बर, मिनिस्टर्स, बड़े-बड़े लोग आकर सिफारिशें करते हैं, प्रेशर डालते हैं रेलवे के ओहदेदारों के ऊपर कि उसका ट्रांसफर रुकवा दें। हम कैसे काबू हासिल करें? आप इन बातों पर गौर करें कि हमारे देश में यह सब होता है या नहीं। हम कहते हैं कि किसको खुशी होगी कि एक कमर्शियल डिपार्टमेंट में बदनामी उठाकर रेलों को चलाया जाये। मैं निहायत अफसोस के साथ और निहायत नम्रता के साथ यह बात इस एवान में कहना चाहता हूं कि हम पूरी कोशिश कर रहे हैं और हमने इसके लिए मुहिम चला रखे हैं, सरप्राइज विजिट्स कर रहे हैं, लोगों के साथ कोआपरेशन ले रहे हैं और हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ कोआपरेट करें ताकि हम जल्दी से जल्दी रेलों को ठीक तरह से चलाने की कोशिश करें लेकिन खाली मिनिस्टर से या रेलवे बोर्ड के मेम्बरों से या रेलवे के ओहदेदारों से ही इस काम में कामियाबी हासिल नहीं की जा सकती है जबतक कि हर शख्स का कोआपरेशन उनके साथ नहीं होगा। मैंने अभी अर्ज किया है कि हमारे देश में एक भावना पैदा करने की जरूरत है, लोगों में एहसास पैदा करने की जरूरत है कि रेलवे प्रापर्टी को वे अपनी प्रापर्टी समझें। अभी हमारे दोस्त ने जापान की मिसाल दी। वहां पर रेलें किस तरह से चलती हैं, क्या उनको यह भी मालूम है? वहां लोगों में जिम्मेदारी का किस तरह का एहसास है? रेलों में लोग क्यू लगा कर चढ़ते हैं। क्यू बनाकर खड़े होते हैं। क्यू बनाकर एक एक दाखिल होता है। जब उनको मालूम होता है कि केपेसेटी फुल हो गई है तो खुद-ब-खुद वे विदड्रा कर लेते हैं। एक आदमी के ऊपर दूसरा आदमी घुसने की कोशिश नहीं करता है। यहां क्या होता है। नल हम लगाते हैं। हमारे मुसाफिर इतने कारगुजार और इतने फर्ज शनास हैं कि लैट्रिलन में जाते हैं तो नल खुला हुआ छोड़ आते हैं और पानी बहता रहता है। अब कोई दूसरा आदमी जाएगा तो उसको क्या पता कि पहले वाला मुसाफिर नल खुला छोड़ गया था और इस वजह से उसमें पानी खत्म हो गया है। वह तो यही कहेगा कि पानी भरा ही नहीं गया। बेसिन को नुक्सान पहुंचाते हैं। उसमें गन्दगी छोड़ देते हैं। जब तक देश में यह एहसास पैदा न हो कि रेलों की सफाई रखना, किसी चीज को नुक्सान न पहुंचाना हमारा कर्त्तव्य

है—ताकि हमारे अपने साथियों को, हमारे अपने दूसरे सफर करने वालों को तकलीफ न हो, उस वक्त तक यह मुम्किन नहीं है कि कोई शिकायत न हो। यह मिसाल भी दी गई है कि रेल रवाना हुई और पानी भरा नहीं गया। पानी भरा जाता है। लोग नल खुले छोड़ देते हैं—

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : सीतापुर से बुरहवल जाने वाली गाड़ी में जहां से गाड़ी चलती है, वहीं पानी नहीं था। आप को गलत रिपोर्ट दी जाती हैं। गाड़ी चली और उसमें पानी नहीं था !

श्री मु० यूनुस सलीम : इस तरह का वाका हमारे नोटिस में लाया जाता है तो हम एक्शन लेते हैं। मैंने अर्ज किया है हमारे जो कर्मचारी हैं वे भी हमारे और आप में से हैं। उनसे भूल भी हो सकती है, सफलता भी हो सकती है और अपना काम भी करने में वे नैगलिजेंट भी हो सकते हैं। ऐसी शिकायत आती हैं तो बराबर हम उनके खिलाफ एकशन लेते हैं ताकि दूसरों के लिए आइन्दा के लिए सबक हो और वे ऐसा काम न करें।

अब मैं सवालों की तरफ आता हूं। पहला सवाल शास्त्री जी ने यह किया है कि गाड़ियां ठीक वक्त पर चलें। उन्होंने पूछा है कि क्या तदवीरें की जा रही हैं। यह एक लम्बी बात है। हम मुख्तलिफ एक्सपेरिमेंट कर रहे हैं। एलार्म चेंज खींची जाती हैं। इसके लिए हमने सोचा है कि इनको ब्लाक कर दें। इम्पोर्टेंट ट्रेंज पर। लेकिन हमें पैसेंजर की सिक्योरिटी का भी ख्याल रखना है। कहां तक हमारा यह एक्सपेरिमेंट कामयाब हो रहा है, इसको हम देख रहे हैं। हम कोशिश कर रहे हैं कि इस तरह से ब्लाक करायें कि आम आदमी की पहुंच में चेन का खींचना न रहे। अगर यह एक्सपेरिमेंट कामयाब हुआ जो इम्पार्टेंड ट्रेंज पर हम कर रहे हैं तो इसको हम और आगे बढ़ायें।

कम्युनिकेशन के मामले में हम पी एंड टी की कोआपरेशन से इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि उन पर वायर की जगह पर एल्मूनियम और स्टील की बनी हुई वायर्ज लगायें। यह ठीक है कि उन वायर्ज से आवाज होती है और साफ नहीं सुनाई देता है जैसे कापर वायर्ज से सुनाई देता है। लेकिन हम कोशिश कर रहे हैं इसके बारे में ताकि लोगों को एट्रेक्शन चोरी का न रहे। बाजार में स्टील और एलमुनियम की वायर इतनी मंहगी नहीं हो सकती जितनी कापर वायर बिकती है।

सरपराइज चैक्स के लिए हमने अपने अफसर मुकर्रर किये हैं। एक सैल भी क्रियेट किया है इसके लिए। वे इस तरह की चीजों को देखते हैं कि गाड़ियां कहां पर हमारे कर्मचारियों की गफलत की बजह से लेट चलती हैं। अगर किसी के खिलाफ रिपोर्ट आती है तो एकशन लिया जाता है। माननीय सदस्य को किताबें भी दी गई हैं ताकि वे हमारे पास शिकायतें कर सकें।

लोकल गाड़ियां बढ़ाने के बारे में भी उन्होंने पूछा है। कुछ गाड़ियां हैं जिनको हम नुकसान में चला रहे हैं। फिर भी हम कोशिश कर रहे हैं कि जहां तक बजट इजाजत दे हम ज्यादा से ज्यादा एमेनेटीज मुसाफिरों को दें फिर चाहे लोक ट्रेंज हों या पैसेंजर ट्रेंज हों।

उन्होंने इंजनों की खराबियों का भी जिक्र किया है। इंजनों को हम हमेशा टैस्ट कराते रहते हैं और जब भी हमारे पास रिपोर्ट आ जाती है कि इस इंजन को बहुत दिन हो गये हैं, यह इस काबिल नहीं है कि ट्रेक पर चलाया जा सके, उसको हम विदड्रा कर लेते हैं। अगर हमें मालूम हो जाता है कि मरम्मत से या उसको ठीक करने से काम नहीं चल सकता है तो फौरन हम उसको विदड्रा कर लेते हैं।

जनता की और इदारों की कोआपरेशन हासिल करने की बात भी उन्होंने कही है। यह बहुत अच्छा सुझाव उन्होंने दिया है।

[श्री मु० यूनुस सलीम]

हम विचार करेंगे कि कहां तक इसको काम में लाया जा सकता है। यकीनन जनता की कोआपरेशन के बगैर इतने बड़े काम को हम नहीं चला सकते हैं।

टेकनिकल खराबियों को दूर करने के बारे में जितनी कोशिश हो सकती है हम कर रहे हैं। एक कमेटी बनाई है जहां तक मुसाफिरों का ताल्लुक है उनको एमेनेटिज देने के बारे में वह बतायेगी कि कहां-कहां हम इम्प्रूवमेंट्स कर सकते हैं। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि हम गाफिल नहीं हैं।

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : सभापति महोदय, आपको बधाई हो, बिहार की कांग्रेस सरकार गिर गई है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर): अब दूसरों को सरकार बनाने का मौका देना चाहिए।

श्री कंवर लाल गुप्त : राष्ट्रपति राज लागू न कर दिया जाये। ऐसा अगर किया गया तो बड़ी बेचैनी होगी। यह षडयंत्र चल रहा है।

डा० राम सुभग सिंह (बक्सर) : जिस नेता के नेतृत्व में बिहार सरकार गिराई गई है उस नेता के नेतृत्व में वहां नई सरकार, प्रजातांत्रिक सरकार बननी चाहिए।

श्री कंवर लाल गुप्त : राष्ट्रपति शासन लागू करने की साजिश हो रही है। इसको रोका जाना चाहिए।

श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा) : बिहार तो गया। अब आप क्या हमें बता सकते हैं यहां की जो पार्लियामेंट है और गवर्नमेंट है, इसका कहीं 21-22 तारीख को डिसाल्यूशन तो नहीं हो रहा है? ऐसी कुछ आप के पास खबर आई है जो आप हमें दे सकते हैं?

सभापति महोदय : बिहार को सरकार गिरी है, अब उसके स्थान पर क्या वैकल्पिक व्यवस्था करनी है, इसके बारे में अगर सरकार चाहे तो सदन को सूचना दे सकती है।

श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी : संसद् के सम्बन्ध में मैं पूछना चाहता हूं।

सभापति महोदय : इसके सम्बन्ध में कोई अधिकृत जानकारी मुझे नहीं है। आज ससद के सत्र का अन्तिम दिन है। सरकार चाहे तो इस सम्बन्ध में कुछ सूचना दे सकती है।

अब हम अगली बहस को लेते हैं। श्री कंवर लाल गुप्त।

श्री कंवर लाल गुप्त : कमिशन की इस निराशाजनक रिपोर्ट पर वाजपेयी जी बोलेंगे हमारी तरफ से।

SHRI CHENGALRAYA NAIDU (Chittoor) : Why can't the Home minister give use information about the Bihar Ministry? In the teleprinter it has already come. Your Government has gone there, Why can't you come out.

18.10 hrs.

DISCUSSION ON REPORT OF COMMISSION OF INQUIRY RE. DEATH OF SHRI DBEN DAYAL UPADHYAYA

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : सभापति महोदय, श्री दीन दयाल उपाध्याय की मृत्यु से सम्बन्धित तथ्यों और परिस्थितियों के बारे में चन्द्रचूड़ आयोग ने जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है, मैं उसके सम्बन्ध में चर्चा आरम्भ करने के लिए खड़ा हुआ हूं। स्वभावतः मैं यह चर्चा बड़े भरे हुए अन्तःकरण से कर रहा हूं। श्री उपाध्याय केवल जनसंघ के प्रधान नहीं थे, हमारे सार्वजनिक जीवन में उनका एक महत्वपूर्ण